DOI: 10.51220/hjssh.v3i1.6

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 3 pp. 41-46, 2008

गढ़वाली लोक साहित्य-एक संक्षिप्त विश्लेषण

कुसुम डोबरियाल एवं जयकृष्ण गोदियाल

संस्कृत विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल-246001

Received 1.2.2008 Accepted 28.11.2008

ABSTRACT

संस्कृति, साहित्य एवं कला के क्षेत्र में गढ़वाल की अपनी पृथक पहचान रही है। इस पवित्र भूमि की महत्ता व साहित्यिक सृजनता इसी बात से विचारणीय है कि संस्कृत के मूर्धन्य कलाकार कालिदास जैसे सुविख्यात कवियों ने इस हिमालय के पवित्र स्मरण से ही काव्य का शुभारम्भ किया। लोक साहित्य समाज के लोकजीवन की अभिव्यक्ति होता है तथा साथ-साथ उस समाज की संस्कृति एवं सभ्यता का भी प्रतीक होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़वाली लोक साहित्य का एक संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है।

Keywords: *गढ़वाल, लोकसाहित्य, लोकगाथायें, वीरगाथायें, पौराणिक गाथायें।*

गढ़वाल के लोक साहित्य, की रचना के विषय में कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं है। यह माना जाता है कि इस साहित्य की रचना में मूलरूप में नारियों का ही हाथ रहा है जो अपने व्यस्त जीवन में इस प्रकार के साहित्य की रचना करके अपने बहुलांश एकाँकी जीवन में लोक साहित्य का सहारा लेती रही। गढ़वाली लोक साहित्य को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:-

पद्य साहित्य, चंपू साहित्य (गद्य-पद्यात्मक) एवं गद्य साहित्य।

गढ़वाली समाज मूलतः धर्मिक भावना से ओत-प्रोत होने के कारण यहां के लोक साहित्य में धार्मिक-पौराणिक गीतों की प्रमुखता होना स्वाभाविक है। इनके अन्तर्गत नागर्जा (नागराज), निरंकार, नरसिंह (नृसिंह), भैरों (भैरव) शिव तथा महाभारत से सम्बन्धित पात्र है। अनेक गीत देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गाये जाते हैं। आँछरी (अप्सरा) से सम्बन्धित एक गीत इस प्रकार है:-

त्वै सूणी लाडी मीं साड़ी द्यूँ लो,
नौरंगी त्वैकू मी चोली द्यूँ लो।
सतरंगी त्वैकू मी दुशालो द्यूँ लो,
सतनाजी त्वैकू मी दैजो द्यूँ लो।

गढ़वाली लोकसाहित्य में संस्कार गीतों की प्रचुरता देखने को मिलती है। वैदिक ऋचाओं की तरह यहाँ के मांगलिक गीतों में अपनी कार्यसिद्धि के लिए ब्रह्मा, अग्नि, भूमिदेवता, सूर्य, आकाश, दसों दिशाओं, पंचनाम देवताओं की स्तुति की जाती है।

© SHARAD

जौ जस दैणा, खोली का गणेश,
जौ जस दैणा, हे धरती माता।
जौ जस दैणा, भूमि का भूम्याल,
जौ जस दैणा, पंचनाम देवता।

ऋतुगीत, जैसे वसन्त पंचमी के विषुवत् संक्रान्ति तक थड़िया गीत, वासन्ती गीत, झुमैलो, चौमासा, चैतीपसारा आदि विशेष दिनों में गाये जाते हैं।

झुमैलो गीत का एक उदाहरण इस प्रकार है-

ऋतु बौड़ी ऐगे हे झुमैलो।
फूली गैनी वणु हे झुमैलो।
ग्वीराल, बुरांस हे झुमैलो।
झपन्याली डाली हे झुमैलो।
घुघूती घुराली हे झुमैलो।

गढ़वाली लोक गाथायें:-

गढ़वाली लोकगाथायें इस क्षेत्र के लोकसाहित्य के प्राण मानी जाती हैं। इनके रचयिता अज्ञात ही हैं। मात्र मौखिक परम्परा के आधार पर ही ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती हैं। वर्तमान में कुछ साहित्यकारों ने इन लोकगाथाओं का संकलन कर प्रकाशित करने का प्रयास किया है इनमें दिनेश चन्द्र बलूनी[1] प्रमुख हैं। दिनेश चन्द्र बलूनी (वही) ने इन लोकगाथाओं को पांच भागों में बांटा है (देव गाथायें, पौराणिक गाथायें, वीर गाथायें प्रणय गाथायें, स्फुट गाथायें)।

देव गाथायें-

गढ़वाल में निरंकार देवता (निराकार ब्रह्म) प्रथम स्थान पर पूजे जाते हैं, तत्पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, लक्ष्मी गणेश को उनके मूल अथवा भिन्न-भिन्न अवतार रूपों में पूजा जाता है। सृष्टि निर्माण से सम्बन्धित एक गाथा के अनुसार सृष्टि का आरम्भ निराकार ब्रह्म से हुआ तब न धरती, न आकाश और न पानी ही उपलब्ध था। निरंकार को ही शिव का सहृदय रूप माना जाता था। सृष्टि की रचना करने के लिए पार्वती के अनुरोध पर (निरंकार) शिव ने अपनी वायीं जांघ के मैल से गरूड़ तथा दायी जांघ के मैल के गरूड़ी को उत्पन्न किया। यौवनावस्था प्राप्त करने के उपरान्त गरूड़ी तथा गरूड़ के विवाह सम्बन्धी प्रस्ताव को ठुकराये जाने से. गरूड़ रो पड़ा। ऐसे में गरूड़ी द्रवित हो उठी। तथा उसने गरूड़ के आंसू पी लिए फलतः गरूड़ी गर्भवती हो उठी। गरूड़ी को अण्डे देने के लिए गरूड़ ने अपने पंख पसारे किन्तु अण्डा गिरकर फूट गया। नीचे के भाग में पृथ्वी तथा उपर के भाग

से आकाश बना। अण्डे की सफेदी से समुद्र और जर्दी से जमीन बनी, इस प्रकार निरंकारी सृष्टि की रचना हुई। इस गाथा के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

बोला-बोला सगुन बोला कैलाश मा भोलेनाथ रे,
भोला शंभूनाथ रौंदा, देखा तौंकी धुनी रमीं च।
तब त बोनी च देवी पार्वती,
हे महादेव जी यकुला कैलाश मा रैगे विष्णु,
तुम अपणा संग कू क्वी चेला बणे देवा।

भगवान शिव के अवतार के रूप में भगवान भैरव की पूजा भी गढ़वाल में अधिकतर स्थानों पर की जाती है। भैरव को महाकाल भैरव रूपी शिव माना जाता है।

पैलि ऊंकार तब भयो निरंकार,
शिव जी की जटा से उपजे गुरु गोरखनाथ।
श्री गोरखनाथ बीर भैंरो बाबा,
जिनने गोरख पंजा, गोरख ध्यान
गोरख की पिंडी औतार लिया[2]।

अन्य देवगाथाओं में देवी नन्दागाथा, नरसिंह वीरगाथा, गोरिल देवता गाथा (सत्य और न्याय के प्रतीक), सिदुवा-बिदुवा गाथा आदि प्रमुख हैं।

बीर गाथायें-

गढ़वाली युवक वीरता एवं साहस के लिए प्रारम्भ से ही जाने जाते हैं। बीरगाथाओं में गढ़वाल के ऐतिहासिक वीरों के शौर्य एवं वीरता के आख्यान गाये जाते हैं। इनमें प्रमुख हैं भानु भौंपेला (राजा गुरुज्ञान चन्द के समकालीन सन् 1374-1419 तक), कफ्फू चौहान (उपूगढ़ के गढ़पति जिन्होंने अजयपाल की अधीनता स्वीकार नहीं की), कालू भण्डारी तथा जीतू बगड्वाल (इनका उल्लेख महाराजा मानशाह के कार्यकाल सन् 1591-1610 में मिलता है।) लोदी रिखोला (1629-1646 तक महाराज महीपति शाह के सेनापति), माधोसिंह भण्डारी (श्रीनगर के राजा महीपतिशाह 1629-46 के सेनापति तथा मलेथा गूल के नायक) तथा तीलू रौतेली (चाँदकोट के थोकदार भूपसिंह की पुत्री जिनके पति की विवाह पूर्व हत्या कर दी गई थी) आदि।

वीर गाथाओं के कुछ संक्षिप्त अंश इस प्रकार हैं-

(1) *हिंडवाणी कोट मा रैंदौ छायौ हंसा हिंडवाण।*
वो त अनमातो, धनमातो जैकी छन बार तिवारी,

बत्तीस निमदारी।
मट्टी जसो अन्न होलो, दुग्यो जसो धन,
बारह छन बेटा जैका, अठार छन नाती।

(भानु भौंपेला से सम्बन्धित)

(2) *जीतू द शोभनू होला गरीबा का बेटा,*
माता त सुमेरा छई, दादी फ्यूँली जौसू।
दादाजी कुंवर छयो, जीतू अकलि गंवार,
बगूड़ी, जैक भौजी, होई नैन बगड्वाल।

(जीतू बगड्वाल से सम्बन्धित)

(3) *तू साक्षी खाटली की देवी,*
तुम साक्षी रैला पंचनाम देव।
तू अमर रैली तीलू, 'सिंघवी' शार्दूला,
जब तक भूमि, सूरज, आसमान।

(तीलू रौतेली से सम्बन्धित)

पौराणिक गाथायें-

पौराणिक गाथायें अधिकतर रामायण तथा महाभारत से जुड़ी है, इसमें सीता का वनवास, नागराजा कृष्ण कथा, कालिया नाग सम्बन्धित गाथा, पाण्डव जन्म गाथा, द्रोपदी स्वयंवर, दुर्योधन गाथा, पाण्डव वनवास आदि है।

नागराजा (श्रीकृष्ण) से सम्बन्धित एक लोकगाथा के अंश इस प्रकार हैं-

यमुनापार होलो कंस को कंसकोट।
यमुनापार होलो गोकुल वैराठ।
बाँयी कोख पैदा पापी कंस,
दैणि कोख, पैदा देवतुली देवकी।
औ मठु वामण लगन भेद्दा।
आठों गर्भ यीं को होलो कंस का छेदक

इसी प्रकार पाण्डवों के जन्म सम्बन्धी एक लोकगाथा के कुछ अंश इस प्रकार हैं।

कौंती माता होली धर्म्याली माता,
बार बरस तै करदी रै दुर्वासा की सेवा।

तब ऋषि दुर्वासा प्रसन्न ह्वैन,
कौंती माता थैं पुत्र वरदान दीनै।
तेरा पाँच पुत्र होला छेतरीमाल,
काटिकी नी काटेन, मारीकी नी मारेन[4]

प्रणय गाथायें-

गढ़वाल की प्रणय गाथाओं में 'मालूशाही' का उच्च स्थान है। इस गाथा में मालूशाही द्वारा राजूला से विवाह कर वैराठ लाने की बात कहकर सुखान्त रूप वर्णित है। एक अन्य गाथा में वर्णित है कि सुनपति शौक ने अन्तिम समय में मालूशाही सहित कत्यूरों को विषाक्त पिलाकर धोखे से मरवा डाला था।

अन्य प्रणय गाथाओं में कुसुमा कोलिन (कृष्ण से सम्बन्धित गाथा जिसमें उनका कोलिन जाति की कुसुमा पर मोहित होने का प्रसंग है), अर्जुन-वासुदत्ता (प्रेमगाथा), फ्युली रौतेली (नागवंशीय कन्या फ्यूली का अन्य जाति के युवक भूपूरौत से प्रणय प्रसंग), तिलोगी तड़ियाल (पौड़ी गढ़वाल के आंचलिक क्षेत्र बनेलस्यूं में व्यासघाट में तिलोगा और अमरदेव का स्मारक आज भी विद्यमान है जहाँ तिलोगा के अमरदेव सजवाण के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके पत्थर में चिनवा दिया गया था।) आदि प्रमुख हैं।

स्फुट गाथायें-

क्षेत्रीय घटनाओं से सम्बन्धित अनेक लघु गाथायें स्फुट गाथाओं के रूप में वर्णित है। इन गाथाओं में रामी-बौराणी, गजेसिंह, मलेथा की गूल, सदेई आदि प्रमुख हैं।

रामी-बौराणी नामक लोकगाथा अधिकतर लोककलाकारों द्वारा मंचित की जाती है। इसके अनुसार रामी का पति विवाहोपरान्त उसे छोड़कर चला जाता है। नौ वर्ष गुजरने के बाद भी रामी सदैव अपने पति की याद में डूबी रहती है। एक दिन रामी का पति साधू वेष में घर लौटता है। पति रामी की पतिव्रता की परीक्षा लेता है। अन्त में जोगी के रूप में रामी का पति अपना भेद खोलता है तथा प्रियजनों को पाकर सभी खुशी का अहसास करते हैं। गाथा के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

बाठा गोड़ाई क्या तेरू नौंच,
बोल वौराणी कख तेरू गौंच।
बटाई जोगी ना पूछ मैकू,
केकु पूछदि क्या चैंदू त्वैकू।
रौंतु की बेटी छौ, रामी नौंच,
सेठू की व्वारी छौ, पाली गौंच।

इसके अतिरिक्त मातृ प्रेम की भावना में डूबी सदेई की गाथा भी एक अनन्य उदाहरण है, जिसने अपने पिता के घर भाई जन्मने की खुशी में अपने बच्चों तक की बलि देनी स्वीकार की-

हे ऊंची डाड्यों तुम नीसि ह्वै जावा,
घौणी कुलायों तुम छाँटि ह्वै जावा।
मैकू लगी च खुद मैतुड़ा की,
बाबाजी कू देश देखण देवा।

एक अन्य स्फुट लोकगाथा जो गढ़वाली साहित्य का पर्याय बन चुकी है वह है राणिहाट। यह स्थान श्रीनगर के पास है जो लूट एवं हत्या जैसी घटनाओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। लोकगाथा के अंश इस प्रकार है-

रणिहाट नी जाणू गाजे सिंह, मेरू बुल्यूं मान्याली गाजे सिंह
हलजोत का दिन गाजे सिंह, तू हौसिया बैख गाजे सिंह।

आभार: लेखक उन सभी विद्वत लेखकों-यथा डॉ० दिनेश वलूनी, स्व० शिवानन्द नौटियाल, डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल एवं डॉ० गोविन्द चातक के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं जिनके शोध लेख सन्दर्भित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. दिनेश चन्द्र बलूनी (1997), उत्तराखण्ड की लोकगाथायें, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।
2. डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, मकरंद
3. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल, गढ़वाल के लोकनृत्य।
4. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाल की लोकगाथायें।